Nazîr (nasmen, cités dans Agra Bazar)

Enfances deKrishna (kanheya, kanha, kanna, kizhan)

थे घर जो ग्वअलिनों के लगे घर से जा-ब-जा
जिस घर को ख़ाली देखा उसी घर में जा फिरा
माखन, मलाई, दूध, जो पाया सो खा लिया
कुछ खाया, कुछ ख़राब किया, कुछ गिरा दिया
ऐसा था बांसुरी के बजैया का बालपन
क्या-क्या कहूं मैं किशन कन्हैया का बालपन

माता जसोदा उनकी बहुत करतीं मिनतियां
और कान्हा को डरातीं उठा बन की संटियां
जब कन्हा जी जसोदा से करते यही बयां
तुम सच न जानो माता, ये सारी हैं झूठियां
ऐसा था बांसुरी के बजैया का बालपन
क्या-क्या कहूं मैं किशन कन्हैया का बालपन

इक रोज़ मुंह में कान्हा ने माखन झुका दिया
पूछा जी जसोदा ने तो वहीं मुंह बना दिया
मुंह खोल तीन लोक का आलम दिखा दिया
इक आन में दिखा दिया और फिर भुला दिया
ऐसा था बांसुरी के बजैया का बालपन
क्या-क्या कहूं मैं किशन कन्हैया का बालपन

Chuon ka achar

फिर गरम हुआ आनके बाज़ार चूहों का
हमने भी किया ख्वानचा तैयार चूहों का
सर-पांच कुचल-कूटके दो-चार चूहों का
जल्दी से कचूमर-सा किया चार चूहों का
क्या ज़ोर मज़ेदार है अचार चूहों का!
अव्वल तो चूहे छांटे हुए क़द के बड़े हैं
और सेर सवा सेर के मेंढक भी पड़े हैं
चख देख, मेरे यार, ये अब कैसे कड़े हैं
चालीस बरस गुज़रे हैं तब ऐसे सड़े हैं
क्या ज़ोर मज़ेदार है अचार चूहों का !
आगे जो बनाया तो बिका बीस रुपए सेर
जाड़ों में यह बिकता रहा बत्तीस रुपए सेर
क्या होलियों में बिकता है चालीस रुपए सेर
क्या ज़ोर मज़ेदार है अचार चूहों का !

Kakri (concombre)

क्या प्यारी-प्यारी मीठी और पतली-पतलियां हैं
गन्ने की पोरियां हैं, रेशम की तकलियां हैं
फरहाद की निगाहें, शीरीन की हंसलियां हैं
मजनूं की सर्द आहें, लैला की उगलियां हैं
क्या खूब नर्मो-नज़ुक इस आगरे की ककड़ी
और जिसमें खास काफ़िर इसकंदरे की ककड़ी
कोई है ज़र्दी-माइल, कोई हरी-भरी है
पुखराज मुनफ़ाइल है, पन्ने को थरथरी है
टेढी है सो तो चूड़ी वह हीर की हरी है
सीधी है सो तो, यारो, रांझा की बांसरी है
क्या खूब नर्मो-नज़ुक इस आगरे की ककड़ी
और जिसमें खास काफ़िर इसकंदरे की ककड़ी
छूने में बर्गे-गुल है, खाने में कुरकुरी है
गर्मी को मारने की इक तीर की सरी है
आंखों में सुख, कलेजे ठंडक, हरी-भरी है
ककड़ी न कहिए इसको, ककड़ी नहीं परी है
क्या खूब नर्मो-नज़ुक इस आगरे की ककड़ी
और जिसमें खास काफ़िर इसकंदरे की ककड़ी

Les nageurs d'Agra (pairna :tairna)

अदना, गरीब, मुफ़लीस, ज़रदार पैरते हैं
इस आगरे में क्या-क्या, ऐ यार, पैरते हैं
जाते हैं उनमें कितने पानी में साफ़ सोते
कितनों के हाथ पिंजरे, कितनों के सर पर तोते
कितने पतंग उड़ाते, कितने मोती पिरोते
हुक्कों का दम लताते, हंस-हंसके शाद होते
सौ-सौ तरह का करकर बिस्सतार पैरते हैं
इक़ आगरे में क्या-क्या, ऐ यार, पैरते हैं